कुल पृष्ठ संख्या-24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ---------------------------------------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ---------------------------------------

नोट :- परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय ....हिन्दी........

परीक्षा का दिन........शनिवार........

दिनांक ....14/3/2020........

नोट :- परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :- (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

Previous Pathshala

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9. **विशेषण** → ~~संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से~~ जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की गुण, दोष, संख्या, मात्रा आदि सम्बन्धी विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हे 'विशेषण' कहते हैं।

उदा॰ – (i) राम अच्छा लडका है।

विशेषण के भेद (दो)

गुणवाचक वि.	संख्यावाचक वि.

10. वाक्य ⇒ प्रशान्त खेल रहा है।

(i) कारक → कर्ता कारक

(ii) काल → वर्तमान काल

(iii) वाच्य → कर्तृवाच्य

13. **मुहावरे**

(क) आसमान सर पर उठाना – बहुत शोर मचाना

(ख) ओखली मे सिर देना – जानबूझ कर संकट मोल लेना

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

11. द्वन्द्व समास → समास का वह रूप जिसमें दोनो पद समान रूप से प्रधान हो तथा आपस में 'योजक चिन्ह' द्वारा जुड़े हो, उसे 'द्वन्द्व समास' कहते है।

उदा - लाभ-हानि → लाभ या हानि
रात-दिन - रात और दिन

★ द्वन्द्व समास में समस्त पद का विग्रह करते समय 'और, या, तथा' आदि शब्दो का प्रयोग करते है।

14. लोकोक्ति - छोटा मुँह बड़ी बात

अर्थ → सामर्थ्य से अधिक डींग हाँकना

२8. सूर्योदय व सूर्यास्त की भूमि

पाठ 'आखिरी चट्टान' में सूर्योदय व सूर्यास्त की भूमि 'कन्याकुमारी' को बताया गया है।

२5. ऋतु-वर्णन ⇒ ऋतु वर्णन कविता के रचयिता का नाम सेनापति है।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	१९. (i)	कवि परिचय :

महाकवि तुलसीदास

" सूर-सूर तुलसी शशि उडुगन केसवदास
आज कवि खद्योत सम जँह तह करत प्रकास ॥"

जन्म → रामभक्तिकाव्यधारा के अमर दीप महाकवि तुलसीदास का जन्म उत्तरप्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में 1532 ई. में हुआ।
पिता – आत्माराम
माता – हुलसी देवी

कष्टपूर्ण जीवन – अभुक्त मूल नक्षत्र में जन्म लेने के कारण इन्हे माता पिता ने त्याग दिया। इन्होने कहा है –

'मातु पिता जग जाय तज्यो,
विधिहू न लिख्यो कहु भाल भलाई'

गुरु नरहरिदास → महाकवि तुलसीदास रामबोला के रूप में भटकते रहे तब इन्हे गुरु नरहरिदास की शरण प्राप्त हुई तथा वे राम भक्ति की ओर मुखरित हो गये।

BSER-165/2019

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

साहित्यिक परिचय → महाकवि तुलसीदास जी ने भगवान श्री राम के साथे अनन्य भाव से भक्ति की है। उनकी भक्ति भावना का मूल लोक मंगल व लोक भावना रहा है। उनकी रचनाओं से उनका अवधी भाषा पर अधिकार सिद्ध होता है।

प्रमुख कृतियाँ

अवधी
- → बरवै रामायण
- → वैराग्य संदीपनी
- → जानकी मंगल
- → पार्वती मंगल
- → रामाज्ञा रत्नावली
- → रामचरितमानस

ब्रज
- → विनयपत्रिका
- → दोहावली
- → मीव गीतावली
- → कृष्ण गीतावली

मृत्यु → महाकवि तुलसीदास की मृत्यु 1623 ई. (1680 संवत) में हुई। उनकी मृत्यु के संबंध में निम्न दोहा प्रचलित है:-

"संवत सौलह सो असी, असी गंग के तीर,
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर"

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) लेखक परिचय :

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

जन्म – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी का जन्म 1850 ई. मे काशी मे हुआ। इनके पिता का नाम गोपालचन्द्र था जो कि स्वयं हिन्दी के एक अच्छे लेखक थे।

सुधारवाद – अपने पिता की मृत्यु के पश्चात भारतेन्दु जी ने अपनी विपुल सम्पत्ति गरीबो मे व लोक मंगल मे लगा दी। उन्होंने बनारस मे हरिश्चन्द्र कॉलेज की स्थापना की।

उपाधि -> अपने सुधारवाद व साहित्य सेवा के कारण लोगो ने उन्हे 'भारतेन्दु' की उपाधि से सुशोभित किया।

साहित्यक परिचय :-

① भारतेन्दु जी को वर्तमान हिन्दी गद्य का प्रवर्तक कहा जाता है।

② प्राचीन व नवीन का सामंजस्य उनकी विशेषता रही है।

③ उन्होंने अपनी रचनाओ मे तत्सम तद्भव शब्दो व व्यंग्य का तालमेल बनाया है।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रमुख कृतियाँ - भारतेन्दु जी ने अपनी अल्प आयु में ही 175 ग्रन्थ लिखे हैं। उनकी कुछ कृतियाँ निम्न है -

मैगजीन - हरिश्चन्द्र मैगजीन, कविवचन सुधा

नाटक - वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, अंधेर नगरी, सत्य हरिश्चन्द्र, चन्द्रावली नाटिका, भारत दुर्दशा, नीलगाय आदि।

मृत्यु - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी की मृत्यु क्षय रोग से ग्रसित होने के कारण 1885 ई. में हुई।

२०. राजहंस :- कवि कृपाराम खिड़िया ने 'राजिया रा सोरठा' में उनके नीतिपरक बातो का समावेश किया है। उनही सोरठो में एक के अनुसार राजहंस प्रतीक है - विवेकशील मनुष्यो का क्योंकि जिस प्रकार दूध व जल के मिश्रण से केवल दूध अलग कर सकता है, उसी प्रकार विवेकशील मनुष्य इस संसार में सही व गलत व्यवहार को तुरंत समझ कर सही बातो को ग्रहण करता है।

Previous Pathshala

अंक द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

8. बोहरा बुक स्टोर, देवासी

पत्रांक – बो. बु. स्टो. २०२०/२०१/104
दिनांक – 15.03.2020

प्रेषक
प्रबन्धक
बोहरा बुक स्टोर
देवासी ।

प्रेषित
व्यवस्थापक
मोहन राघव प्रकाशन
नई दिल्ली ।

विषय – पुस्तके मँगवाने हेतु ।

महोदय,
हमने तीन वर्ष पूर्व पुस्तकों का व्यापार प्रारम्भ किया था। विगत तीन वर्षों से हमारे व्यापार में प्रगति हो रही है। हमने आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की लोकप्रियता व श्रेष्ठता के विषय में काफी सुना है। अतः हम आपसे कुछ पुस्तके मंगवाना चाहते है।
अतः आप नीचे लिखी पुस्तकों की सूची में लिखी पुस्तकों के मूल्य तथा व्यापार शर्तों के साथ भिजवा दे –

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	संख्या
1.	कामायनी	50 प्रतियाँ
2.	शुद्ध कविता की खोज	80 प्रतियाँ
3.	अर्द्धनारीश्वर	50 प्रतियाँ
4.	वीर सतसई	50 प्रतियाँ

अतः आपसे अनुरोध है कि उक्त पुस्तके शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करे।

भवदीय,
बोहरा बुक स्टोर के लिए
अनुक्रमांक – 1103976

18. कवि देव के आराध्य भगवान कृष्ण है।

19. 'संदेसनि मधुबन कूप भरे' पंक्ति के अनुसार कुओं को संदेसो से 'भगवान श्री कृष्ण' ने भर दिए है। गोपियाँ कहती है उन्होने ब्रज से मथुरा जाते समय हर यात्री के हाथ पत्र भिजवाए थे किन्तु श्री कृष्ण ने उपेक्षा कर उन पत्रो को कुओ में फिकवा दिया जिससे अब तक मथुरा के सारे कुँए भर गए होंगे।

Previous Pathshala

क द्वारा त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

15. पद्यांश व्याख्या

उषा की - - - - - - - - - - अपलक कवि

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' के 'उषा की लाली' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इस कविता के कवि 'नागार्जुन' है।

प्रसंग → इस अवतरण में कवि ने सूर्योदय का एक अत्यंत मनोरम दृश्य प्रस्तुत किया है।

व्याख्या → कवि नागार्जुन प्रातः काल में सूर्योदय के समय की मनमोहक व रमणीय प्राकृतिक दृश्यो व प्रकृति की सुन्दरता का वर्णन करते है कि प्रातः काल की लालिमा में प्रकृति का चित्र अत्यंत मनोरम लग रहा है। यद्यपि अभी सूर्योदय नही हुआ है फिर भी चोटियो पर हिम से मंडित शि पर्वत उसका स्वागत कर रहे है। इन बर्फ से जडित शिखर पर जब सूर्य का प्रकाश पडता है तो वे सोने (कनक) के सा समान सुनहरे रंग का प्रतीत होते है। सूर्योदय के समय सूर्य शिशु के समान काफी छोटा होता है तथा वे लगातर

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सूर्योदय का प्रकाश फैलाने हेतु अपना आकार बड़ा करता है। इस प्रकार प्रातः काल का दृश्य लगातार बदलता जा रहा है। इस तीव्र गति से बदलते परिदृश्य को देखकर कवि अचंभित हो रहा है। प्रकृति अपनी सुंदरता का अमृत बिखेर रही है। कवि उसे देखकर काफी प्रसन्न हो रहा है।

विशेष :

कला पक्ष

① भाषा → पद्यांश की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है जिसमें तत्सम तद्भव शब्दावली का सुन्दर समायोजन किया है।
② छंद → छंदमुक्त रचना है।
③ शैली → पद्यांश की शैली चित्रात्मक है।
④ अलंकार → 'शिशु-रवि' में रूपक अलंकार व कनक-शिखर में भी रूपक अलंकार है।

भाव पक्ष

① कवि ने प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व सौन्दर्य का अपनी प्रतिभा से सजीव चित्रण किया है।

BSER-163/2019

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अपठित पद्यांश

4. **शीर्षक** → पुरानी व नई राह

5. खूलो की राह (अर्थात वीरता का रास्ता) अछूती रह जाती है।

6. 'खूलो की राह' को नई माना गया है क्योंकि अब लोग सुखदायक जीवन जीने की नहीं सोच रहे बल्कि वे वीरता से दुश्मनो का मुकाबला करने हेतु अस्त्र शस्त्र धारण कर अपने जीवन को मातृभूमि के लिए भेंट चढ़ाना चाहते है।

7. हामिद ने मेले से 'चिमटा' खरीदा। प्रारम्भ मे दुकानदार ने उसकी कीमत छह पैसे बतीस बतायी, किन्तु हामिद ने अपनी चतुरता से उसे 'तीन पैसे' मे खरीद लिया।

9. 'प्रकृति पद्मिनी के अंशुमाली' मे अंशुमाली शब्द 'ईश्वर' के लिए आया है, क्योंकि वह ईश्वर ही सूर्य के समान इस कमल रूपी प्रकृति को खिला कर उसका रूप संवार रहे है तथा उसकी देखभाल कर रहे है। वे ही इस प्रकृति के प्रमुख पोषणकर्त्ता है।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	16	

सप्रसंग व्याख्या 'गद्यांश'

अत्रि की - - - - - - - - - - चाहते है।
~~चाहते है।~~

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' के स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन शीर्षक पाठ से लिया गया है। यह पाठ 'महावीर प्रसाद द्विवेदी' जी द्वारा रचित है।

प्रसंग - इस अवतरण में लेखक स्त्री शिक्षा के समर्थन में कुछ व्यंग्यात्मक शब्दों का प्रयोग करते है।

व्याख्या - लेखक ~~लिखते~~ लिखते है कि प्राचीन काल मे भी स्त्रियो की पढने की परंपरा थी। उस समय भी अनेक विदुषियाँ थी। उदाहरणार्थ महर्षि अत्रि की पत्नी अपना व्याख्यान देते समय दांतो तक अपना ज्ञान प्रकट करती थी व गार्गी बडे-बडे ज्ञानियो को ज्ञान मे हरा देती। मंडन मिश्र की पत्नी अपने ज्ञान से शंकराचार्य जी को हरा देती। ~~क्या~~ इससे बडा प्रमाण क्या हो सकता है। लेखक व्यंग्य कसते हुए कहते है कि यह सब पढने के ही दुष्परिणाम

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

है। अगर स्त्रियों को पढ़ाया ही नहीं जाता तो वे उन महान ऋषियों का मुकाबला नहीं कर पाती। यह सब स्त्रियों को पढ़ाने का ही बुरा परिणाम है।
स्त्रियों के लिए पढ़ना कलंक व पुरुषों के लिए सम्मान की बात। ऐसी झूठी दलीलों के आधार पर ही कुछ लोग स्त्रियों को अनपढ़ रखकर भारत का गर्व बनाना चाहते है। यह इस प्रकार करना असंभव है।

विशेष :

① पद्यांश गद्यांश की भाषा सहज, सरल तथा व्यंग्यात्मक है।
② 'कालकूट' तथा 'पीयूष का घूँट' जैसे सटीक शब्दों का प्रयोग किया गया है।
③ लेखक ने विदुषियों के उदाहरण देकर स्त्री शिक्षा का समर्थन किया है।

१२. 'अमर शहीद' एकांकी के अनुसार सागरमल गोपा को बेदी जैसल निम्न कारणों से बनाया गया -

(i) उसने जैसलमेर में हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई।
(ii) उसने 'रघुनाथ सिंह का मुकदमा' व 'जैसलमेर का गुंडा राज' नामक पुस्तक लिखकर जनता को सजग किया।
(iii) उसने जवाहर लाल नेहरू व अन्य नेताओं को गुप्त पत्र भेजे।
(iv) उसने सामंती अत्याचारों के विरुद्ध जन जागृति फैलायी।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अपठित गद्यांश

1.) **शीर्षक** - सगुण व निर्गुण भक्ति

2. निर्गुण ब्रह्म की विशेषताएँ

① निर्गुण ब्रह्म में परमात्मा को निराकार, अरूप, अनादि सर्वव्यापी आदि माना जाता है।

② यह परमात्मा का कोई रूप नही बताता व सम्पूर्ण भारतीय समाज को एक रूप में पिरोता है।

3.

~~निर्गुण~~ सगुण भक्त कवि	~~सगुण~~ निर्गुण भक्त कवि
(i) सगुण भक्त कवि परमात्मा को सगुण, साकार मानकर उनकी पूजा करते है।	(i) निर्गुण भक्त कवि ईश्वर को निराकार मानकर उनकी विवेचना करते है।
(ii) उन्होंने हिन्दू समाज के विभिन्न विघटकों को समाप्त किया।	(ii) उन्होंने हिन्दू व मुसलमान का भेद भुलाकर मानवता के मूल्यों की स्थापना की।

12. **वाक्य शुद्धीकरण**

(क) रमेश की तो माँ मर गई है।

(ख) घर में सब कुशल है।

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18. संत दादू दयाल का जीवन चरित्र

संत दादू दयाल का जन्म संवत् 1601 में माना जाता है।
दादू पंथियों के अनुसार वे अहमदाबाद के निकट साबरमती नदी में बहते हुए पाये गये थे।
इस प्रकार दादू जी का जन्म का प्रारम्भिक जीवन कष्टदायक था।
संत दादू दयाल प्रमुख संत तथा समाज सुधारक के रूप में समाज में विख्यात है।

दारिद्र स्थिति :- दादू दयाल काफी गरीब थे किन्तु उन्होंने कभी इसका दर्द व्यक्त नहीं किया। उन्होंने कहा है
दादू रोजी राम है, राजिक रिजक हमार
दादू उस प्रसाद से पोष्या सब परिवार

जात-पात में अविश्वास :- दादू जात-पात में विश्वास नहीं करते थे। उनके अनुसार सभी मनुष्य ईश्वर की संतान है।

हिंसा विरोधी :- दादू ने कहा कि हिंसा से दूर रहो। उन्होंने कहा कि जीवमात्र का शिकार मत करो।

निंदा-स्तुति में समभाव :- दादू ने अपने शिष्यों को परनिंदा न करने की सलाह

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

दी है। उन्होने कहा -

दादू निंदा ताको भावे
जाके हिरदे राम ना आवे।

पंचतीर्थ - दादू ने अपने जीवनकाल में कई यात्राएँ की। उनके निवास व उपदेश स्थलों के रूप में पांच स्थल प्रमुख है -

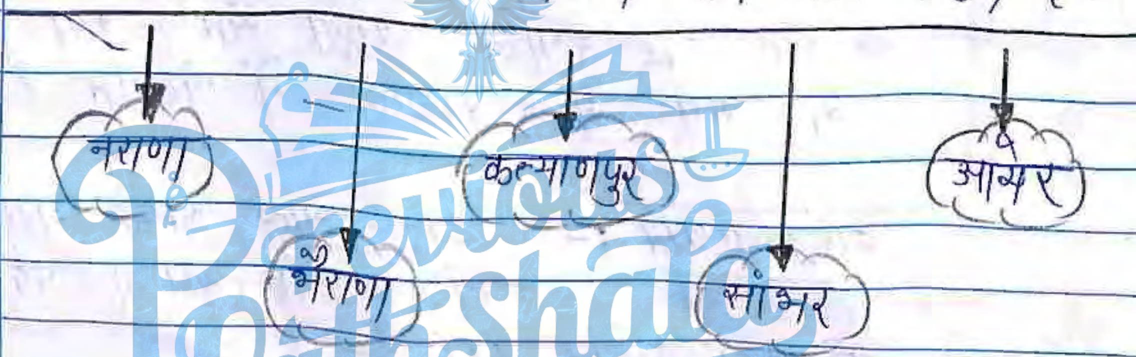

इस प्रकार संत दादू दयाल का जीवन काफी प्रेरणा दायी है।

23. ईर्ष्या से बचाव के उपाय :- ईर्ष्या से बचाव के लेखक ने यह उपाय बताया है कि 'नीत्से के विचार' को अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा है कि- 'भीडभाड वाले स्थानो को छोडकर एकांत की ओर भागो।' अतः ईर्ष्या से बचाव का उपाय है कि हमें ईर्ष्यालु लोगो के साथ नहीं रहना चाहिए बल्कि उनसे अलग होकर अच्छे कार्य करने चाहिए।

Previous Pathshala

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

17. कन्यादान कविता की मूल संवेदना

कविता 'कन्यादान' ऋतुराज द्वारा रचित एक संवेदनशील कविता है।
इस कविता में एक माँ अपनी पुत्री का विवाह करते समय उसे अपनी अंतिम पूंजी मानकर ससुराल में होने वाले कुछ व्यवहारों की सीख दे रही है।
माँ अपने जीवन से प्राप्त अनुभवों को आधार बनाकर बेटी को कुछ शिक्षाएँ देती है कि :-

(i) चेहरे पर मत रीझना - माँ बेटी को कहती है कि तुम अपने ससुराल जाकर अपनी सुन्दरता पर अभिमान मत करना क्योंकि यह किसी के मन में ईर्ष्या उत्पन्न कर सकता है।

(ii) वस्त्र व आभूषण पर लोभित मत होना - माँ पुत्री को यह भी शिक्षा देती है कि तुम्हे ससुराल से वस्त्र व गहने मिलेंगे किन्तु वे शाब्दिक भ्रमों की तरह है, वे तुम्हारी अस्मिता समाप्त कर देंगे अतः उन पर मत लुभाना।

(iii) आत्मदाह मत करना - माँ कहती है कि जिस आग पर रोटियाँ सेकी जाती है, तुम

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अनैतिक आचरण होने पर उसपर कूद कर आत्मदाह मत करना। साहस से परिस्थितियों का मुकाबला करना।

(iv) कोमलता बनाए रखना पर कमजोरी नहीं :-

माँ ने कहाँ 'लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना' अर्थात् तुम महिलाओं के समान कोमलता रखना पर अनैतिक व्यवहार होने पर कमजोर मत बनना।

अतः यह कविता ससुराल में स्त्रियों के साथ होने वाले दुराचरण को अभिव्यक्त कर उससे घबराने नहीं व साहस के साथ सामना करने की शिक्षा दी है।

२४. मानव शरीर के विषय में लोकसंत पीपा के विचार है कि यह शरीर पंचतत्वों से मिलकर बना है। वह इसी में मिल जाएगा। इस शरीर में ही परमात्मा का निवास होता है, कहीं बाहरी दुनिया में नहीं। अतः सच्चे मन से ईश्वर की पूजा करनी चाहिए। यह शरीर ईश्वर का बनाया हुआ है तथा वे ही इसे समाप्त भी करते है।

Previous Pathshala

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

7 निबन्ध : बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

रूपरेखा : ① प्रस्तावना : बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ की अवधारणा

② लिंगानुपात कम होने के कारण

③ कन्या भ्रूण हत्या रोकने के उपाय

④ स्त्री-शिक्षा का महत्व व उपाय

⑤ उपसंहार

(i) (प्रस्तावना :)- बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ भारत सरकार द्वारा चलायी गए एक ~~एक~~ बहुत ही प्रासंगिक नीति है जो कि समाज मे स्त्री जन्म को प्रोत्साहन देने हेतु बनायी गयी है।

हमारे देश मे बहुत से ऐसे लोग है, जो स्त्री शिक्षा को व उसके जन्म को अभिशाप मानते है। तथा माता की कोख मे ही उसकी हत्या करा देते है। अतः यह कार्यक्रम ऐसे लोगो को जागृत कर उन्हे बालिका जन्म को प्रोत्साहन देना है।

जिस बेटी से चमक रही है यह धरती
कभी वो कोख मे मरती, कभी दहेज के बलि चढ़ती

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) लिंगानुपात कम होने के कारण :- हमारे देश में लिंगानुपात काफी कम है। लिंगानुपात का अर्थ - प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या

भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में लिंगानुपात 940 ही है। अर्थात प्रतिहजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या केवल 940 ही है।

यह काफी शर्म व चिंता का विषय है।

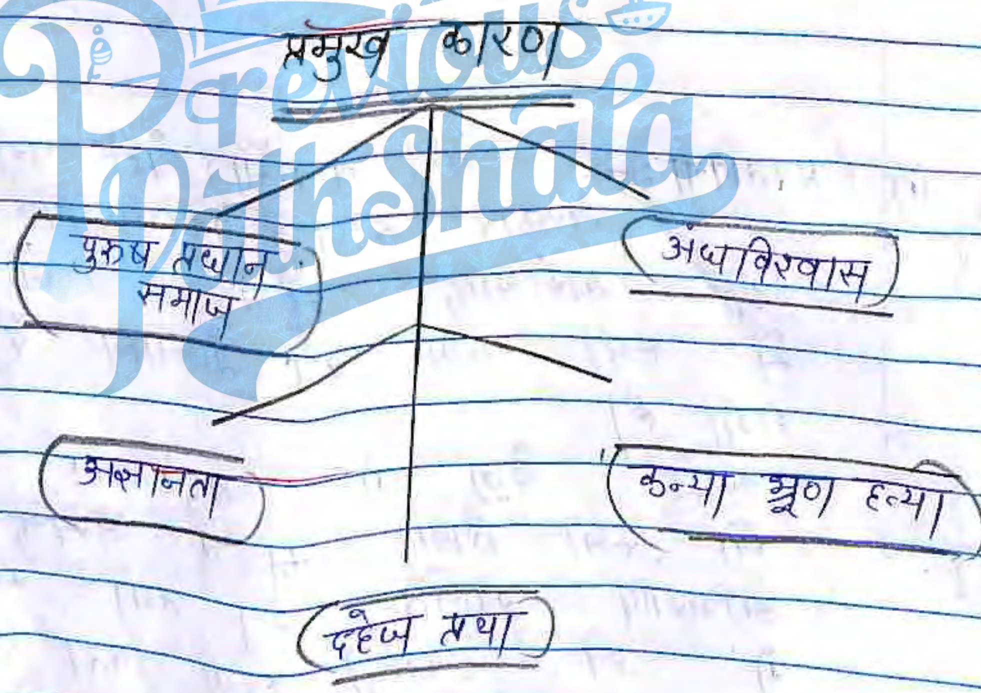

यह लिंगानुपात कम होना एक बहुत बड़ी चिंता का विषय है।

" मरवा दिया बेटी को जिसने पत्नी की कोख में, कन्या ढूंढने निकला है, वो नवरात्रि के भोज में

BSER-16/52019

Previous Pathshala

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) **कन्या भ्रूण हत्या रोकने के उपाय :**

कन्याभ्रूण हत्या एक भयंकर समस्या है जिसे प्रायः देखा जाता है। लोग कन्या को पराया धन मानकर व लड़को से कम समझकर कोख में ही मरवा देते हैं।

इस पाप से लोग जरा भी नहीं घबराते हैं। अतः भारत सरकार ने बेटी बचाओ व बेटी पढ़ाओ के माध्यम से उन लोगो को कठोर सबक सिखाकर उन्हें कन्या भ्रूण हत्या करने से रोकने के लिए एक अभियान चलाया है।

यह निम्न उपायों से कम हो सकती है:-

1. लोगो में कन्या जन्म को लेकर जागृति फैलाना।
2. उनके अंधविश्वास व अज्ञानता को दूर करके
3. दहेज उन्मूलन द्वारा इसे काफी कम किया जा सकता है।
4. महिलाओं के लिए तथा बालिकाओं के लिए चलाई जा रही योजनाओ से उन्हें अवगत करना।

"बहुत सरल है पेट में करना मुझ पर वार
हिम्मत है तो माँ मुझे पैदा करके मार"

BSER-165/2019

Previous Pathshala

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) स्त्री-शिक्षा का महत्व व उपाय :- स्त्री शिक्षा देश के विकास तथा उनकी बालिकाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार करने हेतु एक बहुत आवश्यक कारक है। हमें यह बात समझनी आवश्यक है।

स्त्री शिक्षा का महत्व समझना बहुत आवश्यक है प्राचीन काल में भी कई विदुषी स्त्रियाँ थी उनमें गार्गी, मैत्रेयी, शीला, विज्जा आदि प्रमुख है। स्त्री शिक्षा को अनर्थ नहीं मानकर उसे बढ़ाने की जरूरत है। स्त्री शिक्षा हेतु कई योजनाएँ चलाई जा रही है।

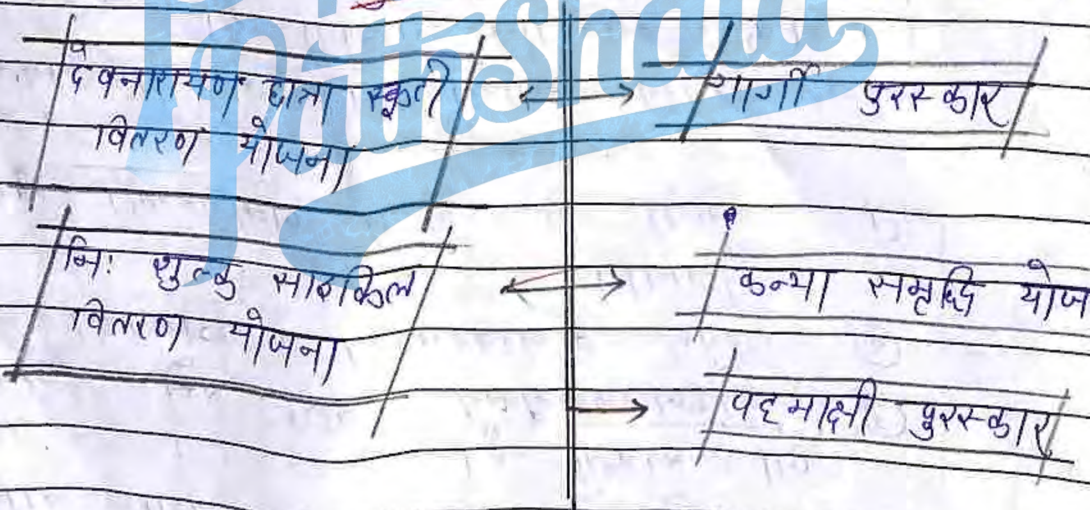

अतः उपरोक्त योजनाओं के माध्यम से स्त्री शिक्षा को बढ़ाया जा रहा है।

बेटी बचाओ 'बेटी पढ़ाओ'
जन-जन में जागृति फैलाओ

BSER-165/2019

Previous Pathshala